‘स्वरचित’ - काव्य स्पर्धा

- कवितेचे शीर्षक : - स्वरचित
- कवी / कवयित्रीचे नाव :- सौ. गीतांजली हरळे

आओ आकाश छु ले,
ये स्वर ह्रदयस्वर कहलाये....

कल के साथ आज को ले के,
नई बात नई चाह से हो के,
और फिर कल को दोहराये,
सांज और सवेरे के जैसे....
निर्मल झरना पवित्र गंगा,
दूर दूर के हिमालय जैसे,
नवसृजन का निर्माण कराते,

आओ थोडा़ सा गुणगुणाये,
मन की पतंग को लहराये....

ग्यान पाकर अंध:कार मिटाये,
बिंब को प्रतिबिंब दिखलाये,
मन से मन को पहचाने,
हां ...वही से जहाँ से प्रणव निकले,
ॐ ॐ ॐ शांती का अनुभव ले,
आत्मा को परमात्मा से जोडे....

आओ आकाश छु ले,
मन खुशियोंसे लहराये....

Anahat Music Therapy

'स्वरचित' - काव्य स्पर्धा

आज की शाम कल का सुरज,
मन ही मन में नित समाये,
प्रकृती का प्रेम और आशिर्वाद लिए,
हर जगह स्वर को सजाए,
ध्वनी-प्रतिध्वनी को पास लिए,
प्रभू-प्रेम का सुमीरन करे....

आओ आकाश छु ले,
ह्रदयकमल में कृष्ण जगाए....

आकाश, पृथ्वी, अग्नी, पवन और पानी,
इस पंचतत्व की सुरीली बानी,
पास आकर खुद पहचान करे,
तन-मन को सुगंधित किये,
विश्व का अनुभव करे....

आओ आकाश छु ले,
हर सांस का एहसास करे....

राह निहारे बस चलते चलते,
आँखो को थोडा विस्मित करके
पूर्णचंद्र की शोभा देखे,
सावन को मनभावन से देखे....
रोज खुद के ह्रदयस्वर को सुनते,
स्वरतत्व को महसूस करते....
चित को निश्चल बनाये,
स्वयंभू स्वर को नतमस्तक होते....

आओ आकाश छु ले,
ये स्वर ह्रदयस्वर कहलाये....

Anahat Music Therapy